वीतराग शासन जयवंत हो

श्री अभिनन्दननाथ विधान

माण्डला

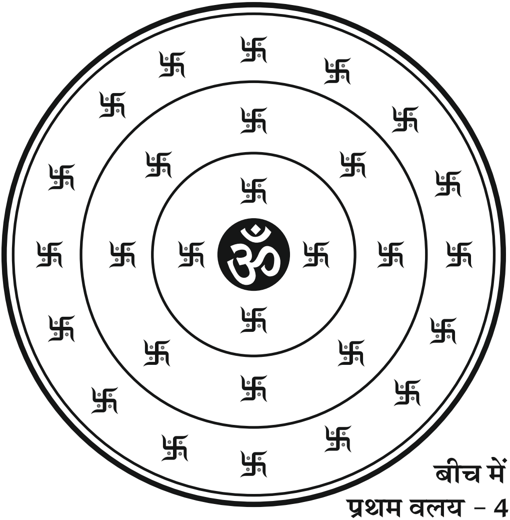

बीच में – ॐ
प्रथम वलय – 4 अर्घ्य
द्वितीय वलय – 8 अर्घ्य
तृतीय वलय – 16 अर्घ्य
कुल – 28 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

कृति	:	**श्री अभिनन्दननाथ विधान**
कृतिकार	:	प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण	:	द्वितीय, 2026
प्रतियाँ	:	1000
संकलन	:	स्थविर मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज मुनिश्री विभोरसागरजी, मुनिश्री विलक्ष्यसागरजी, मुनिश्री विपिनसागरजी
सहयोगी	:	आर्यिका श्री 108 भक्तिभारती माताजी क्षुल्लिका श्री 105 वात्सल्यभारती माताजी
संपादन	:	ब्र. आस्था दीदी - मो.: 9660996425 ब्र. प्रदीप भैया - मो.: 7568840873
प्राप्ति स्थल	:	1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017 2. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी, मो.: 9416888879 3. नीरज जैन, लखनऊ, मो.: 9451251308 4. जय अरिहंत टेडर्स, दिल्ली, मो.: 9818115971 5. राजेश जैन, खाकरोट वाले, इन्दौर, मो.: 9425316970

पुण्यार्जक परिवार - पारसचन्द, सुरेशकुमार, रमेशकुमार, कमलकुमार, विमलकुमार, धर्मचन्द भानु कुमार, चांदसेन वाले, जयपुर
मो.: 8387961608

दीपक जैन, गुमानीलाल, जावरिया, उदयपुर (राज.), मो.: 9950655005

कृति : **श्री अभिनन्दननाथ विधान**

कृतिकार : प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण : द्वितीय, 2026

प्रतियाँ : 1000

संकलन : स्थविर मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
मुनिश्री विभोरसागरजी, मुनिश्री विलक्ष्यसागरजी,
मुनिश्री विपिनसागरजी

सहयोगी : आर्यिका श्री 108 भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लिका श्री 105 वात्सल्यभारती माताजी

संपादन : ब्र. आस्था दीदी - मो.: 9660996425
ब्र. प्रदीप भैया - मो.: 7568840873

प्राप्ति स्थल : 1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017
2. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी, मो.: 9416888879
3. नीरज जैन, लखनऊ, मो.: 9451251308
4. जय अरिहंत टेडर्स, दिल्ली, मो.: 9818115971
5. राजेश जैन, खाकरोट वाले, इन्दौर, मो.: 9425316970

पुण्यार्जक परिवार - श्री बाबूलाल जैन, श्रीमती सरला जैन,
महावीर नगर, जयपुर (राज.) मो.: 9982332696

श्रीमान दिनेश कुमार मांगीलाल जी जैन, पुत्र - युवराज, आर्जव
सोमावव परिवार, गीगंला, राजस्थान (मुम्बई),
मो.: 9172420301

श्री अभिनन्दननाथ

तर्ज - अभिनन्दन-अभिनन्दन जिनराज.....

अभिनन्दन-अभिनन्दन, श्री जिनराज हमारे हैं।
भव्य जीव इस जग के जिनने, कई इक तारे हैं।। टेक।।
स्वर्ग लोक से जयकर के प्रभु, गर्भ में आए थे।
सोलह स्वप्न मात को जिनकी, श्रेष्ठ दिखाए थे।।
शत इन्द्रों ने प्रभु के कीन्हे, शुभ जयकारे हैं।
अभिनन्दन-अभिनन्दन, श्री जिनराज हमारे हैं।।1।।
जन्मोत्सव पर इन्द्रराज, ऐरावत लाया था।
पाण्डुक शिला पे जाके प्रभु का, न्हवन कराया था।।
शत इन्द्रों ने प्रभु के सिर पे, कलशा ढारे हैं।। अभिनन्दन...।।2।।
मेघ विनाश देख कर प्रभु को, मन वैराग्य जगा।
यह संसार असार प्रभू को, तब से लगने लगा।।
राज पाट सब त्याग प्रभू जी, संयम धारे हैं।। अभिनन्दन...।।3।।
निज आतम का ध्यान लगाकर, हुए कर्म नाशी।
केवलज्ञान जगाए प्रभु जी, शिवपुर के वासी।।
कर्म शत्रु इस जग के प्रभु के, आगे हारे हैं।। अभिनन्दन...।।4।।
कूटानन्द सम्मेद शिखर से, प्रभु शिव पद पाए।
सुर-नर मुनि जिनके चरणों में, वन्दन को आए।।
सत्य अहिंसा परमो धर्मः, देते नारे हैं।। अभिनन्दन...।।5।।
जिनवर की महिमा है अनुपम, इस जग में भाई।
'विशद' ज्ञान के धारी प्रभु जी, पाए प्रभुताई।।
गुण जितने भी रहे लोक में, पाए सारे हैं।। अभिनन्दन...।।6।।

विनय पाठ (लघु) (दोहा)

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देवजी, कर्म नशाए आठ।।1।।
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान।
अनन्त चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान।।2।।
पीड़ा हारी लोक में, भव-दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के, शिवपद के दातार।।3।।
धर्मामृत दायक प्रभो !, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र।।4।।
भविजन को भवसिन्धु में, एक आप आधार।
कर्म बन्ध का जीव के, करने वाले क्षार।।5।।
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हों नाश।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश।।6।।
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग।।7।।
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो !, आया तुमरे द्वार।।8।।
मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अंत।।9।।
मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार।।10।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अथ पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्योनमः। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं, धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।1।। ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधूभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।2।। ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।3।। ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।4।। ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।5।।

"पूजा प्रतिज्ञा पाठ"

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण।
तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान।
भाव शुद्धि पाने हे स्वामी !, करता हूँ प्रभु का गुणगान।।1।।
निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान !
हे अर्हन्त ! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन।
होकर के एकाग्रचित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन।।2।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपामि।

“स्वस्ति मंगल पाठ”

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश।।
विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरह मल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय।।

इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि।

“परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ”

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निस्पृह होकर करें साधना, ‘विशद’ करें स्व पर कल्याण।।1।।
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौं भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान।।
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान।।2।।
भेद आठ औषधि ऋद्धि के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश।।
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज।।3।।

।। इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधानं ।।

मूलनायक सहित समुच्चय पूजा

स्थापना (दोहा)

देव शास्त्र गुरु देव नव, विद्यमान जिन सिद्ध।
कृत्रिमा-कृत्रिम बिम्ब जिन, भू निर्वाण प्रसिद्ध।।
सहस्त्रनाम दशधर्म शुभ, रत्नत्रय णमोकार।
सोलह कारण का हृदय, आह्वानन् शत् बार।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व देव शास्त्र गुरु, नवदेवता, तीस चौबीसी विद्यमान विंशति जिन, पंचमेरु, नन्दीश्वर, त्रिलोक सम्बन्धी, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सहस्त्रनाम, सोलह कारण, दशलक्षण, रत्नत्रय, णमोकार, निर्वाण क्षेत्रादि समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी-छन्दः)

यह निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रुज विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय जलं निर्व.स्वाहा।

सुरभित यह गंध चढ़ाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय चंदनं निर्व.स्वाहा।

अक्षत के पुंज चढ़ाएँ, शाश्वत अक्षय पद पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

पुष्पित हम पुष्प चढ़ाएँ, कामादिक दोष नशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय पुष्पं निर्व.स्वाहा।

चरु यह रसदार चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

रत्नोंमय दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय दीपं निर्व.स्वाहा।

सुरभित यह धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय धूपं निर्व.स्वाहा।

फल ताजे शिव फलदायी, हम चढ़ा रहे हैं भाई।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय फलं निर्व.स्वाहा।

यह पावन अर्घ्य चढ़ाएँ, अनुपम अनर्घ्य पद पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा - शांती पाने के लिए, देते शांती धार।
हमको भी निज सम करो, कर दो यह उपकार।।

(शांतये शांतिधारा)

दोहा - पुष्पांजलि करते यहाँ, लेकर पावन फूल।
विशद भावना है यही, कर्म होंय निर्मूल।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा - जैन धर्म जयवंत है, तीनों लोक त्रिकाल।
गाते जैनाराध्य की, भाव सहित जयमाल।।

(ज्ञानोदय छन्द)

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैन धर्म जिन चैत्य जिनालय, जैनागम का है अर्चन।।1।।
भरतैरावत ढाई द्वीप में, तीन काल के जिन तीर्थेश।
पंच विदेहों के तीर्थंकर, पूज रहे हम यहाँ विशेष।।2।।
स्वर्ग लोक में और ज्योतिषी, देवों के जो रहे विमान।
भावन व्यन्तर के गेहों में, रहे जिनालय महति महान।।3।।
मध्य लोक में मेरु कुलाचल, गिरि विजयार्ध है इष्वाकार।
रजताचल मानुषोत्तर गिरि तरु, नन्दीश्वर है मंगलकार।।4।।
रुचक सुकुण्डल गिरि पे जिनगृह, सिद्ध क्षेत्र जो हैं निर्वाण।
सहस्त्रकूट शुभ समवशरण जिन, मानस्तंभ हैं पूज्य महान।।5।।
उत्तम क्षमा मार्दव आदिक, बतलाए दश धर्म विशेष।
रत्नत्रय युत धर्म ऋद्धियाँ, सहसनाम पावें तीर्थेश।।6।।

दोहा - सोलह कारण भावना, और अठाई पर्व।
पंच कल्याणक आदि हम, पूज रहें हैं सर्व।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक 1008 श्री ....सहित वर्तमान भूत भविष्यत सम्बन्धी पंच भरत, पंच ऐरावत, पंच विदेह क्षेत्रावस्थित सर्व तीर्थंकर,

नवदेवता, मध्य ऊर्ध्व एवं अधोलोक, नन्दीश्वर, पंचमेरु सम्बन्धित कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, गर्भ जन्म तप केवलज्ञान निर्वाण भूमि, तीर्थ क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, दशलक्षण, सोलहकारण, रत्नत्रयादि धर्म, ढाई द्वीप स्थित तीन कम नो करोड़ गणधरादि मुनिवरेभ्यो सम्पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा - जिनाराध्य को पूजकर, पाना शिव सोपान।
यही भावना है विशद, पाएँ पद निर्वाण।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

इष्ट प्रार्थना

तर्ज - भावना दिन रात मेरी.....

भावना भगवान मेरी, यह सुखी संसार हो।
सत्य संयम शील धर, हर जीव का उद्धार हो।।टेक।।
पाप का परिहार होवे, धर्म का प्रचार हो।
वीर वाणी का सतत्, व्यवहार घर-घर बार हो।।
सप्त व्यसन का जहाँ से, हे प्रभू जी ह्रास हो।
शान्ति वा आनन्द का, हर जीव के उर वास हो।।
देव गुरु वाणी में हर इक, जीव का विश्वास हो।
हर बुराई का जहाँ से, पूर्णतः अब नाश हो।।
खेद अरु भय शोक हे जिन !, जीव के सब दूर हों।
सौख्य शांती से सभी जन, पूर्णतः भरपूर हों।।
संत श्रावक के हृदय से, मद सदा चकचूर हो।
हो 'विशद' धर्मात्मा हर, नूर का भी नूर हो।।

दोहा - भाए जो यह भावना, मन में श्रद्धा धार।
अल्प काल में जीव वह, हो जाए भव पार।।

श्री अभिनन्दननाथ स्तवन

दोहा - अभिनन्दन जिनके चरण, वन्दन बारम्बार।
करते हैं हम भाव से, पाने भवदधि पार।।

(ज्ञानोदय छन्द)

नानाविधि कर्मों का होता, जड़ शरीर के द्वारा बन्ध।
सुख दुख फल में मोही होकर, समझ रहा भ्रम से सम्बन्ध।।
निश्चय क्षण भंगुर को स्थिर, मान विश्व को दुखी महान।
तत्त्व कथन कर समझाया है, अतः आपने सम्यक् ज्ञान।।1।।
क्षुधा आदि के प्रतीकार से, यह शरीर ना होता पुष्ट।
इन्द्रिय जनित अल्प सुख पाके, चेतन कभी ना हो संतुष्ट।।
कर सकते हैं ये पदार्थ ना, इन दोनों का कुछ उपकार।
यही आपके उपदेशों का, हे अभिनन्दन ! गाया सार।।2।।
लम्पट प्राणी भी इस जग में, पापों से रहते भयभीत।
इसी भीति के कारण डरते, करते हुए अकार्य अनीति।।
जिनसे दोनों लोक बिगड़ते, ऐसे कार्यों का कर ज्ञान।
कैसे फँसता है जग उनमें ?, कहा आपने हे भगवान !।।3।।
विषय वांछा जग जीवों को, उपजाती संताप महान।
तृष्णा सदा बढ़ाती जिससे, सुख को ना मिलता स्थान।।
लोक हितैषी नाथ ! आपका, पावन गाया शुभ उपदेश।
अतः आपको संत मानते, जग उपकारी जिन तीर्थेश।।4।।

(पुष्पांजलिं क्षिपते)

श्री अभिनन्दननाथ पूजन

स्थापना

दोहा – अतिशय मंगलकार हैं, अभिनन्दन जिनराज।
आह्वानन् जिनका हृदय, करते हैं हम आज।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(विरागी छन्द)

कंचन सा जल का रूप, आतम का सोहे।
निर्मल जिनका स्वरूप, जग का मन मोहे।।
हम पूज रहे जिनपाद, शिव पदवी पाने।
चरणों में आये आज, श्री जिन गुण गाने।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलता तपता संसार, शीतल क्या जग में।
जिन तरु हैं छायादार, हम हैं प्रभु पग में।।
हम पूज रहे जिनपाद, शिव पदवी पाने।
चरणों में आये आज, श्री जिन गुण गाने।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भव सिन्धू क्षार अपार, कौन खिवैया है।
तुम तारण तरण जहाज, तव पद नैय्या है।।

हम पूज रहे जिनपाद, शिव पदवी पाने।
चरणों में आये आज, श्री जिन गुण गाने।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हम काम रोग हर पुष्प, लेकर के आए।
इन्द्रिय के भोग मनोग, हम को सब भाए।।
हम पूज रहे जिनपाद, शिव पदवी पाने।
चरणों में आये आज, श्री जिन गुण गाने।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन का पाने स्वाद, ले नैवेद्य खड़े।
जिनवर को करते याद, जिनके चरण पड़े।।
हम पूज रहे जिनपाद, शिव पदवी पाने।
चरणों में आये आज, श्री जिन गुण गाने।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग रहा मोह से व्याप्त, जीते कौन बली।
अन्तर ज्योति दो आप्त, भागे मोह खली।।
हम पूज रहे जिनपाद, शिव पदवी पाने।
चरणों में आये आज, श्री जिन गुण गाने।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जले-जले न कर्म, जो दुर्गन्धित हैं।
जल जाएँ धूप से कर्म, धर्मी वन्दित हैं।।

हम पूज रहे जिनपाद, शिव पदवी पाने।
चरणों में आये आज, श्री जिन गुण गाने।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल निष्फल देते रोग, जिससे जग रोये।
फल अर्पण से सुख भोग, निज कालुष धोए।।
हम पूज रहे जिनपाद, शिव पदवी पाने।
चरणों में आये आज, श्री जिन गुण गाने।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम सुख की करते चाह, किन्तू दाह जगे।
पा जायें सच्ची राह, निज का मोह भगे।।
हम पूज रहे जिनपाद, शिव पदवी पाने।
चरणों में आये आज, श्री जिन गुण गाने।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांतीधारा जो करें, पावें शांति अपार।
शिवपद के राही बनें, होवें भव से पार।।

(शान्तये शान्तिधारा)

दोहा- पुष्पांजलिं करते विशद, लेकर पावन फूल।
कर्म अनादी से लगे, हो जावें निर्मूल।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

(सखी छन्द)

वैशाख शुक्ल छठ आई, रत्नों की झड़ी लगाई।
जब गर्भ में प्रभु जी आए, तव मात पिता हर्षाए।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला षष्ठ्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारस सित माघ बताई, जनता सारी हर्षाई।
जन्मोत्सव इन्द्र मनाए, जयकारा सभी लगाए।।2 ।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित माघ द्वादशी जानो, संयम धारे प्रभु मानो।
वन में जा संयम धारे, तब देव किए जयकारे।।3।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदश सित पौष की गाई, प्रभु ज्ञान की कली खिलाई।
सब दिव्य देशना पाए, जिन धर्म की धार बहाए।।4।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला चतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख सुदी छठ जानो, शिव पद पाए प्रभु मानो।
सम्मेद शिखर शुभ गाया, आनन्द कूट मन भाया।।5।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला षष्ठ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – अभिनन्दन ! वन्दन करें, चरण आपके दास।
जयमाला गाते शुभम्, पाने मुक्ती वास।।

(ज्ञानोदय छन्द)

अभिनन्दन प्रभु के चरणों में, माथा इन्द्र झुकाए हैं।
संवर पितु सिद्धार्था माता, के जो बाल कहाए हैं।।
नगर अयोध्या जन्म लिए तब, इन्द्र ऐरावत ले आया।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराके, बन्दर लक्षण बतलाया।।1।।
पचास लाख पूरब की आयू, देह स्वर्णमय शुभकारी।
साढ़े तीन सौ धनुष ऊँचाई, सहस्राष्ट लक्षण धारी।।
सहस भूप सह दीक्षा पाए, दो दिन बाद लिए आहार।
नगर अयोध्या इन्द्रदत्त नृप, के गृह वरषे रत्न अपार।।2।।
गणधर एक सौ तीन आपके, वज्रनाभि थे गणी प्रधान।
यक्षेश्वर था यक्ष आपका, यक्षी वज्र श्रृंखला जान।।
कूट आनन्द से तीर्थराज पर, खड्गासन से मोक्ष प्रयाण।
'विशद' मोक्ष पद पाए प्रभुजी, करने वाले जग कल्याण।।3।।
तीन लोक के नाथ आपका, भव्य जीव यशगान करें।
भक्ती अर्चा करके पावन, वे अपना कल्याण करें।।
अभिनन्दन जिन का वन्दन कर, भव्य जीव शिव पाते हैं।
हम भी शिव पदवी को पाने, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

दोहा – शिव पद पाया आपने, आठों कर्म विनाश।
मुक्ती पाएँ हम प्रभू, कर दो पूरी आस।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– बनकर आये भक्त हम, प्रभू आपके द्वार।
करना होगा भक्त को, हे प्रभु ! भव से पार।।

।। इत्याशीर्वाद: ।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

प्रथम वलय:

दोहा– महिमा मयी महान हैं, अभिनन्दन भगवान।
पुष्पांजलि कर पूजते, करते हम यशगान।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(अनन्त चतुष्टय)

(दोहा)

ज्ञानावरणी कर्म का, करके आप विनाश।
विशद ज्ञान पाकर किए, शिव नगरी में वास।।1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्म रहित अनन्त ज्ञान सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावरण का, क्षय करके भगवान।
शिव पद के राही बने, पाए पद निर्वाण।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरणी कर्म रहित अनन्त दर्शन सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह कर्म को जीतकर, समकित पाए आप।
गुण पाने प्रभु आपके, करें नाम का जाप ।।3।।

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म रहित अनन्त सुख सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तराय को नाशकर, पाए वीर्य अनन्त।
भ्रमण मैटकर के बने, मुक्ती वधु के कंत।।4।।

ॐ ह्रीं अन्तराय कर्म रहित अनन्त वीर्य सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश तप धारी हुए, अनन्त चतुष्टयवान।
अर्हत् पद धारी विशद, पाए शिव सोपान।।5।।

ॐ ह्रीं द्वादश तप रहित अनन्त चतुष्टय युक्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा- ऋद्धि सिद्धि दातार हैं, अभिनन्दन भगवान।
पुष्पांजलि कर पूजते, करते हैं गुणगान।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(अष्ट ऋद्धि युत जिन के अर्घ्य)

बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, श्री जिनवर ने पाए हैं।
जिनकी अर्चा करके शिवपद, पाने को हम आए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं बुद्धि ऋद्धि धारकाय श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

ऋद्धि विक्रिया के एकादश, भेद श्रेष्ठ बतलाए हैं।
जिनकी अर्चा करके शिवपद, पाने को हम आए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं विक्रिया ऋद्धि धारकाय श्रीअभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

भेद आठ चारण ऋद्धी के, अतिशयकारी गाए हैं।
जिनकी अर्चा करके शिवपद, पाने को हम आए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं चारण ऋद्धि धारकाय श्रीअभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

तप ऋद्धी के भेद सात शुभ, तप करके प्रगटाते हैं।
जिनकी अर्चा करके शिवपद, पाने को हम आते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं सुतप ऋद्धि धारकाय श्रीअभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

बल ऋद्धी के तीन भेद भी, शक्ती वान बनाते हैं।
जिनकी अर्चा करके शिवपद, पाने को हम आते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं बल ऋद्धि धारकाय श्रीअभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

आठ भेद औषधि ऋद्धी के, श्री जिनवर ने पाए हैं।
जिनकी अर्चा करके शिवपद, पाने को हम आए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं औषधि ऋद्धि धारकाय श्रीअभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

रस ऋद्धी के भेद कहे छह, ऋषिवर तप से पाते हैं।
जिनकी अर्चा करके शिवपद, पाने को हम आते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं रस ऋद्धि धारकाय श्रीअभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

है अक्षीण ऋद्धि दो भेदों, वाली मुनिवर पाते हैं।
जिनकी अर्चा करके शिवपद, पाने को हम आते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं अक्षीण ऋद्धि धारकाय श्रीअभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

अष्ट ऋद्धियों के प्रभेद शुभ, चौंसठ यह हो जाते हैं।
जिनकी अर्चा करके शिव पद, पाने को हम आते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं अष्ट ऋद्धि धारकाय श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतिय वलय:

दोहा - द्वादश तप धारी हुए, प्रभु जी अतिशय वान।
जिनकी अर्चा हेतु हम, करते हैं गुणगान ।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(द्वादश तप, अतिशय के अर्घ्य)

(मोतियादाम छन्द)

सुतप अनशन जो लेते धार, चतुर्विध त्यागें वे आहार।
कर्म का कर देते वे नाश, शीघ्र करते हैं ज्ञान प्रकाश।।1।।

ॐ ह्रीं अनशन तप धारकाय श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

क्षुधा से कम लेते आहार, करें ऊनोदर भली प्रकार।
कर्म का कर देते वे नाश, शीघ्र करते हैं ज्ञान प्रकाश।।2।।

ॐ ह्रीं ऊनोदर तप धारकाय श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

विविध रस का करते परिहार, सुतप रस त्याग स्वयं लें धार।
कर्म का कर देते वे नाश, शीघ्र करते हैं ज्ञान प्रकाश।।3।।

ॐ ह्रीं रस परित्याग तप धारकाय श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वृत्ति का करते हैं संख्यान, वृत्ति संख्यान सुतप ये मान।
कर्म का कर देते वे नाश, शीघ्र करते हैं ज्ञान प्रकाश।।4।।

ॐ ह्रीं वृत्ति परिसंख्यान तप धारकाय श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विविक्त शैय्या करते स्वीकार, विविक्त शैय्याशन तप को धार।
कर्म का कर देते वे नाश, शीघ्र करते हैं ज्ञान प्रकाश।।5।।

ॐ ह्रीं विविक्त शैय्यासन तप धारकाय श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुतप काय क्लेश धारते जीव, कर्म का क्षय वे करें अतीव।
कर्म का कर देते वे नाश, शीघ्र करते हैं ज्ञान प्रकाश।।6।।

ॐ ह्रीं काय क्लेश तप धारकाय श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धरी छन्द)

प्रायश्चित तप धारें विशद संत, जो करें स्वयं के कर्म अन्त।
वे कर्म निर्जरा करें जीव, जो मोक्षमार्ग की धरें नींव।।7।।

ॐ ह्रीं प्रायश्चित तप धारकाय श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप विनय रहा जग में प्रधान, मुक्ती का जो मानो निधान।
वे कर्म निर्जरा करें जीव, जो मोक्षमार्ग की धरें नींव।।8।।

ॐ ह्रीं विनय तप धारकाय श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैय्यावृत्ती तपधर मुनीश, शिव पद के बनते स्वयं ईश।
वे कर्म निर्जरा करें जीव, जो मोक्षमार्ग की धरें नींव।।9।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ती तप धारकाय श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वाध्याय परम तप है विशेष, आगम में कहते हैं जिनेश।
वे कर्म निर्जरा करें जीव, जो मोक्षमार्ग की धरें नींव।।10।।

ॐ ह्रीं स्वाध्याय तप धारकाय श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्युत्सर्ग सुतप जो धरें जीव, वे राग हटाते हैं अतीव।
वे कर्म निर्जरा करें जीव, जो मोक्षमार्ग की धरें नींव।।11।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग तप धारकाय श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशयकारी तप रहा ध्यान, अनुपम जो गाया है महान।
वे कर्म निर्जरा करें जीव, जो मोक्षमार्ग की धरें नींव।।12।।

ॐ ह्रीं ध्यान तप धारकाय श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व भवों के पुण्य सुफल से, तीर्थंकर प्रकृति कर प्राप्त।
जन्म के अतिशय पाते हैं जिन, विशद कहे जाते हैं आप्त।।
जिनके चरणों वन्दन करके, भाव सहित करते गुणगान।
विशद भावना भाते हैं यह, हम भी पाएँ शिव सोपान।।13।।

ॐ ह्रीं जन्मातिशय प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय के धारी होकर, कर्म निर्जरा करें विशेष।
ज्ञान के अतिशय पाते हैं शुभ, बन जाते हैं जो तीर्थेश।।
जिनके चरणों वन्दन करके, भाव सहित करते गुणगान।
विशद भावना भाते हैं यह, हम भी पाएँ शिव सोपान।।14।।

ॐ ह्रीं ज्ञानातिशय प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तीर्थंकर के गुण से प्रेरित, होकर चौदह अतिशय देव।
करते हैं जो भक्ति भाव से, समवशरण में आय सदैव।।
जिनके चरणों वन्दन करके, भाव सहित करते गुणगान।
विशद भावना भाते हैं यह, हम भी पाएँ शिव सोपान।।15।।

ॐ ह्रीं देवातिशय प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

प्रातिहार्य हों प्राप्त प्रभू को, हो जाता जब केवलज्ञान।
श्री जिनवर के चरणों झुकते, देव सुरासुर महिमावान।।
जिनके चरणों वन्दन करके, भाव सहित करते गुणगान।
विशद भावना भाते हैं यह, हम भी पाएँ शिव सोपान।।16।।

ॐ ह्रीं अष्ट प्रातिहार्य प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

तीन लोक में पुण्य पताका, फहराती है चारों ओर।
भव्य जीव जिन दर्शन करके, हो जाते हैं भाव विभोर।।
जिनके चरणों वन्दन करके, भाव सहित करते गुणगान।
विशद भावना भाते हैं यह, हम भी पाएँ शिव सोपान।।17।।

ॐ ह्रीं तप अतिशय एवं प्रातिहार्यातिशय प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

जाप्य :

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

दोहा– अभिनन्दन पद वन्दना, कर हों जीव निहाल।
भाव सहित जिनकी विशद, गाते हैं जयमाल।।

(ज्ञानोदय छन्द)

जीवन रेखा टूटे जिनकी, ज्ञान लता भी मुरझाए।
घोर उदासी के बादल हों, साया मौत का आ जाए।।
कष्टों से व्याकुल हो जीवन, भजे प्रभू का जो भी नाम।
मृत्युंजय हो जीवन सुखमय, प्रभू पद में शुभ करें प्रणाम।।1।।
हुए महाबल अनुपम राजा, गाए अतिशय वैभववान।
रक्षक थे चातुर्यवर्ण के, न्यायवन्त पावन यशवान।।
भोग रोग में समय गँवाए, किन्तू तृप्ती वे ना पाए।
तब वैराग्य धारकर मुनि बन, शाश्वत आतम को ध्याए।।2।।
सोलह कारण भाए भावना, तीर्थंकर पद बन्ध किए।
अगले भव में पंचकल्याणक, पाने का अनुबन्ध किए।।
स्वर्ग अनुत्तर के सुख भोगे, फिर भू पर अवतार लिए।
सोलह स्वप्न मात ने देखे, जिन पद माथा टेक दिए।।3।।
पाण्डुक शिला पे देव प्रभू का, भक्ती युत अभिषेक किए।
सहस नयन से इन्द्र दर्श कर, अभिनन्दन शुभ नाम दिए।।

बनते मिटते मेघ देख कर, श्री जिनवर वैराग्य लिए।
विनाशीक भोगों का वैभव, क्षण में प्रभु जी त्याग दिए।।4।।
दीक्षावन में असनवृक्ष के, नीचे आतम ध्यान किए।
वर्ष अठारह किए साधना, केवलज्ञान प्रकाश किए।।
श्री सम्मेद शिखर पर जाकर, आनन्द कूट से शिव पाए।
अभिनन्दन पद वन्दन करके, शिव पद पाने हम आए।।5।।

दोहा- मर्कट लक्षण धर प्रभू, अभिनन्दन तीर्थेश।
'विशद' भाव से हम यहाँ, अर्चा करें विशेष।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- सुरतरु के शुभ सुमन ले, पुष्पांजलि पद लाय।
शिवपद हमको दो प्रभो !, अभिनंदन जिनराय।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री अभिनंदननाथ चालीसा

दोहा- नव देवों के चरण में, नव कोटी के साथ।
भक्ती करते भाव से, चरण झुकाते माथ।।
अभिनन्दन जिनराज का, चालीसा शुभकार।
मुक्ती पद के भाव से, गाते अपरम्पार।।

(चौपाई)

है आकाश अनन्तानन्त, जिसका कहीं न होता अंत।।1।।
बीच में तीनों लोक महान्, मध्य लोक में मध्य प्रधान।।2।।

जिसमें जम्बूद्वीप विशेष, दक्षिण में है भारत देश।।3।।
नगर अयोध्या रहा महान्, संवर नृपति हैं जिसका जान।।4।।
कश्यप गोत्र रहा शुभकार, वंश इक्ष्वाकू मंगलकार।।5।।
रानी सिद्धार्था उर आन, गर्भ में आए जिन भगवान।।6।।
प्रत्यूष बेला रही प्रधान, पुनर्वसू नक्षत्र महान्।।7।।
वैशाख शुक्ला षष्ठी जान, पाए प्रभू गर्भ कल्याण।।8।।
माघ शुक्ल बारस शुभकार, जन्म लिए जिन मंगलकार।।9।।
पुनर्वसु नक्षत्र प्रधान, राशि का स्वामी बुध पहिचान।।10।।
पीत वर्ण तन का शुभकार, बन्दर चिह्न रहा मनहार।।11।।
पचास लाख पूरब की जान, आयू पाये जिन भगवान।।12।।
साढ़े तीन सौ धनुष महान्, अवगाहन प्रभु तन का जान।।13।।
प्रभु ने देखा मेघ विनाश, धारण किए आप सन्यास।।14।।
माघ शुक्ल बारस मनहार, प्रत्यूष बेला अपरम्पार।।15।।
चित्रा हस्त पालकी जान, पुनर्वसु नक्षत्र महान्।।16।।
नगर अयोध्या रहा महान्, दीक्षा स्थल उग्र उद्यान।।17।।
दीक्षा वृक्ष असन पहिचान, धनु व बयालिस सौ ऊँचे मान।।18।।
सहस भूप सह दीक्षित जान, कर बेला उपवास महान्।।19।।
दो दिन बाद लिए आहार, क्षीर खीर का प्रभु मनहार।।20।।
नगर अयोध्या मंगलकार, राजा इन्द्रदत्त गृहवार।।21।।
शुभ अष्टादश वर्ष विशेष, रहे आप छद्मस्थ जिनेश।।22।।
पौष शुक्ल चौदस दिनमान, प्रभु ने पाया केवल ज्ञान।।23।।
इन्द्रराज धनपति के साथ, आकर चरण झुकाए माथ।।24।।

समवशरण रचना शुभकार, साढ़े दश योजन विस्तार।।25।।
पद्मासन में बैठ जिनेश, दिव्य-देशना दिए विशेष।।26।।
गणधर एक सौ तीन महान्, वज्रनाभि थे गणी प्रधान।।27।।
तीन लाख मुनिवर अनगार, प्रभु के साथ रहे शुभकार।।28।।
यक्षेश्वर था यक्ष प्रधान, यक्षी वज्र श्रृंखला जान।।29।।
छठ वैशाख शुक्ल की जान, श्री सम्मेद शिखर स्थान।।30।।
खड्गासन से आप जिनेश, कूटानन्द स्थान विशेष।।31।।
सर्व कर्म का किए विनाश, सिद्ध शिला पर कीन्हें वास।।32।।
पाए ज्ञान अनन्तानन्त, सुख अनन्त पाए भगवन्त।।33।।
आप हुए अभिनन्दन नाथ, भक्त झुकाते तव पद माथ।।34।।
कई जिनबिम्ब रहे शुभकार, सर्व जहाँ में मंगलकार।।35।।
अनुपम रहा दिगम्बर भेष, देते शिवपद का उपदेश।।36।।
भक्ती करें भाव के साथ, प्रभु के चरण झुकाएँ माथ।।37।।
उसका होय 'विशद' कल्याण, शीघ्र प्राप्त हो केवलज्ञान।।38।।
नश जाए क्षण में संसार, मुक्ती पद पाए शुभकार।।39।।
हम भी करते प्रभु गुणगान, प्राप्त हमें हो पद निर्वाण।।40।।

दोहा- अभिनन्दन जिनराज का, चालीसा शुभकार।
पढ़े सुने जो भाव से, उसका हो उद्धार।।
सुख-शांती सौभाग्य पा, जग में बने महान्।
कर्म नाश कर जीव वह, पद पावे निर्वाण।।

श्री अभिनंदन भगवान की आरती

आज करें हम अभिनन्दन की, आरती मंगलकारी।
घृत के दीप जलाकर हम भी, लाए प्रभु के द्वार।।
हो जिनवर, हम सब उतारे मंगल आरती-2।।टेक।।

नगर अयोध्या जन्म लिए तब, हर्षे सब नर-नारी।
पन्द्रह माह पूर्व इन्द्रों ने, रत्न वृष्टि की भारी।।
हो प्रभु...।।1।।

माँ सिद्धार्था इन्द्रदत्त गृह, हुए आप अवतारी।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराए, इन्द्र सभी शुभकारी।।
हो प्रभु...।।2।।

साढ़े तीन सौ धनुष प्रभू के, तन की है ऊँचाई।
लाख पचास पूर्व की आयू, श्री जिनवर ने पाई।।
हो प्रभु...।।3।।

माघ सुदी बारस को प्रभु जी, उत्तम तप अपनाए।
पौष सुदी चौदस को अनुपम, केवलज्ञान जगाए।।
हो प्रभु...।।4।।

छठी शुक्ल वैशाख मोक्ष पद, गिरि सम्मेद से पाए।
'विशद' गुणों को पाने प्रभु के, आरति करने आए।।
हो प्रभु...।।5।।

समुच्चय महाअर्घ

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैनागम जिन चैत्य जिनालय, जैन धर्म को शत् वन्दन।।
सोलह कारण धर्म क्षमादिक, रत्नत्रय चौबिस तीर्थेश।
अतिशय सिद्धक्षेत्र नन्दीश्वर, की अर्चा हम करें विशेष।।
दोहा – अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, 'विशद' भाव के साथ।
चढ़ा रहे त्रययोग से, झुका चरण में माथ।।

ॐ ह्रीं श्रीं अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, सरस्वती देव्यै, सोलहकारण भावना, दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, नन्दीश्वर, पंच मेरु सम्बन्धी चैत्य-चैत्यालय, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरनार, चम्पापुर, पावापुर आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, तीस चौबीसी, तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो नमः / ॐ ह्रीं श्रीं मन्तं भगवन्तं कृपाल संतं श्रीवृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेव आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्य खंडे..... देशे.....प्रान्ते.....नाम्नि नगरे.....मासानामुक्तमे.....मासे.....शुभ पक्षे..... तिथौ.....वासरे.....मुनि आर्यिका श्रावक श्राविकानां सकल कर्म क्षयार्थं अनर्घ्य पद प्राप्तये समुच्चय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पक्षेपण करते हुए शांति पाठ बोलें)

शांतिपाठ

शांतिनाथ शांति के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
परम शांत मुद्रा जो धारे, जग जीवों के तारण हारे।।

शरण आपकी जो भी आते, वे अपने सौभाग्य जगाते।
शांतिपाठ पूजा कर गाएँ, पुष्पांजलि कर शांति जगाएँ।।
जिन पद शांती धार कराएँ, जीवन में सुख शांति पाएँ।
जीवों को सुख शांति प्रदायी, धर्म सुधामृत के वरदायी।।
शांतिनाथ दुख दारिद्र नाशी, सम्यक्दर्शन ज्ञान प्रकाशी।
राजा प्रजा भक्त नर-नारी, भक्ति करें सब मंगलकारी।।
जैन धर्म जिन आगम ध्यायें, परमेष्ठी पद शीश झुकाएँ।
श्री जिन चैत्य जिनालय भाई, विशद बनें सब शांति प्रदायि।।
(शान्तये शान्तिधारा-3) (दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत) (कायोत्सर्ग करोम्यहं)

विसर्जन पाठ

भूल हुई हो जो कोई, जान के या अन्जान। बोधि हीन मैं हूँ विशद, क्षमा करो भगवान।।
ज्ञान ध्यान शुभ आचरण, से भी हूँ मैं हीन। सर्व दोष का नाश हो, शुभाचरण हो लीन।।
पूजा अर्चा में यहाँ, आए जो भी देव। करूँ विसर्जन भाव से, क्षमा करो जिन देव।।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः अर्हंदादि परमेष्ठिनः पूजन विधिं विसर्जनं करोमि। अपराध क्षमावतं भवतु।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

(ठोने में पुष्पक्षेपण करें)

'आशिका लेने का मंत्र'

पूजा कर आराध्य की, धरे आशिका शीश।
विशद कामना पूर्ण हो, पाँए जिन आशीष।।

जो मुस्करा कर जिया करते हैं, हँसकर गम पिया करते हैं।
वे इंसान के रूप में देवता हैं जो औरों को सहारा दिया करते हैं।।

आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्जः - माई री माई मुंडरे पर तेरे बोल रहा कागा...)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के....
ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की...2, महिमा कही न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।टेक।।
सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।टेक।।
जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला...2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।टेक।।
धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।टेक।।